Duniya Ki Mahabbat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 355
Weekly Booklet : 355

दुन्या की महब्बत

सफ़्हात 18

दुन्या का मत्लब 03
ज़ोहद और फ़क़्र में फ़र्क़ 13
ज़ोहद के दरजात 15
ज़ोहद का कमाल दरजा 18

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

दुन्या की महब्बत

दुआए अत्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़्ह़ात का रिसाला : **"दुन्या की मह़ब्बत"** पढ़ या सुन ले उसे अपने सिवा किसी का मोह़ताज न कर और उस के दिल से दुन्या की मह़ब्बत निकाल, ह़क़ीक़ी आ़शिक़े रसूल बना और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे। أٰمين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

रोज़ी में बरकत का बेहतरीन वज़ीफ़ा

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा, उस ने फ़क़्रो फ़ाक़ा और रोज़ी में तंगी के बारे में अ़र्ज़ की, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे (बरकते रिज़्क़ का वज़ीफ़ा बताते हुए) इर्शाद फ़रमाया : जब तुम घर में दाख़िल हो तो सलाम करो चाहे घर में कोई हो या न हो, फिर मेरी बारगाह में सलाम पेश करो और (फिर) सूरए इख़्लास एक मरतबा पढ़ लो। उस शख़्स ने इस पर अ़मल किया तो **अल्लाह** पाक ने (इस की बरकत से) उस शख़्स पर रिज़्क़ के दरवाज़े खोल दिये यहां तक कि उस ने अपने रिज़्क़ से अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों को भी फ़ाएदा पहुंचाया। (القول البدیع، ص273)

ह़ाजतें सब रवा हुई उस की　　है अ़जब कीमिया दुरूद शरीफ़

(दीवाने काफ़ी, स. 27)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : ह़ाजतें : ज़रूरतें। **रवा होना :** पूरी होना। **अ़जब :** अ़जीब। **कीमिया :** मक़्सद ह़ासिल करने का ज़रीआ़।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मैं दुन्या हूं (वाक़िआ़)

अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते हुमैद बिन हिलाल رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते अ़ला बिन ज़ियाद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : एक मरतबा मैं ने ख़्वाब में लोगों को किसी चीज़ के पीछे जाते देखा तो मैं भी उस के पीछे चल दिया, जब देखा तो वोह टूटे हुए दांतों वाली एक कानी बुढ़िया थी जो हर क़िस्म के ज़ेवर से आरास्ता और ख़ूब ज़ेबो ज़ीनत इख़्तियार किये हुए थी, मैं ने पूछा : तू कौन है ? कहा : मैं दुन्या हूं। मैं ने कहा : मैं बारगाहे इलाही में इल्तिजा करता हूं कि वोह मेरे दिल में तेरे लिये बुग़्ज़ो नफ़रत डाल दे। उस ने कहा : जी हां ! अगर आप मालो दौलत से नफ़रत करेंगे तो मुझ से ख़ुद बख़ुद नफ़रत पैदा हो जाएगी। (الزہد لامام احمد، ص265، حدیث:1429)

दुन्या को तू क्या जाने येह बिस की गांठ है ह़र्राफ़ा
सूरत देखो ज़ालिम की तो कैसी भोली भाली है
शहद दिखाए ज़ह्र पिलाए, क़ातिल, डाइन, शौहर कुश
इस मुर्दार पे क्या ललचाया, दुन्या देखी भाली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 186)

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ दुन्या के मक्रो फ़रेब बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ऐ **अल्लाह** के बन्दे ! तू दुन्या को क्या जानता है ? शक्लो सूरत से सीधी साधी नज़र आने वाली येह दुन्या "**ज़ह्र की पुड़िया**" है, येह धोकेबाज़ औ़रत की त़रह़ है, येह ऐसी ज़ालिमा है कि ज़ह्र को शहद बना कर दिखाती है और जो इस से महब्बत करता है येह अपने आ़शिक़ को ही मार देती है, येह दुन्या बड़ी ख़राब और मुर्दार है, इस के साथ दिल लगाने का कोई फ़ाएदा नहीं, येह आज़्माई हुई बात है।

आ़लमे इन्क़िलाब है दुन्या चन्द लम्ह़ों का ख़्वाब है दुन्या

फ़ख़्र क्यूं दिल लगाएं इस से नहीं अच्छी, ख़राब है दुन्या

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

दुन्या का मत़लब

इमाम जौहरी कहते हैं : दुन्या का लुग़वी मा'ना है "क़रीब" और दुन्या को दुन्या इस लिये कहते हैं कि येह आख़िरत की निस्बत इन्सान से ज़ियादा क़रीब है या इस वज्ह से कि येह अपनी ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात के सबब दिल से ज़ियादा क़रीब है। (इस्लाह़े आ'माल, 1/128) (الحدیقۃ الندیہ، 1/65)

दुन्या की मह़ब्बत की बुराई

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह बड़ा गुनाह जिस की लोग **अल्लाह** पाक से मग़्फ़िरत त़लब नहीं करते "दुन्या की मह़ब्बत" है। (فردوس الاخبار، 1/402، حدیث:2990) एक और ह़दीसे पाक में है : حُبُّ الدُّنۡیَا رَأۡسُ کُلِّ خَطِیۡئَۃٍ या'नी दुन्या की मह़ब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है। (موسوعہ لابن ابی الدنیا، 5/22، حدیث:9)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ "फ़ैज़ुल क़दीर" में फ़रमाते हैं : जैसा कि तजरिबे और मुशाहदे से साबित है कि दुन्या की मह़ब्बत ज़ाहिरी और छुपे हर गुनाह को दा'वत देती है, ख़ास त़ौर पर वोह गुनाह जिस का दारो मदार सिर्फ़ इसी पर हो, इस लिये दुन्या का आ़शिक़ गुनाह और इस की बद सूरती को जानने के बा वुजूद दुन्या की मह़ब्बत में मस्त हो जाता है। दुन्या की मह़ब्बत शक की त़रफ़ ले जाती है फिर मकरूह (या'नी ना पसन्दीदा चीज़ों) की त़रफ़ फिर ह़राम की त़रफ़ और (مَعَاذَ اللّٰہ) कभी कभी दुन्या की मह़ब्बत कुफ़्र की त़रफ़ ले जाती है बल्कि तमाम उम्मतें जिन्हों ने अपने अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام का इन्कार किया उन के

कुफ़्र का सबब दुन्या की महब्बत थी। हर गुनाह की अस्ल (या'नी जड़) दुन्या की महब्बत है, इसी लिये कहा जाता है कि दुन्या शैतान की शराब है जो इस में से पियेगा उस का नशा मरते वक़्त ही उतरेगा नादिम व शरमिन्दा होते हुए। दुन्या की महब्बत तबाह कुन है, चन्द लोगों के इलावा ज़ियादा तर के दिल से इस की महब्बत नहीं निकलेगी। (فیض القدیر،3/487، تحت الحدیث:3662ملخصاً) इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जैसे दुन्या की महब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है ऐसे ही दुन्या से नफ़रत तमाम नेकियों की अस्ल है। (التیسیر بشرح جامع الصغیر،1/492)

हमारे दिल से निकल जाए उल्फ़ते दुन्या दे दिल में इश्क़े मुहम्मद मेरे रचा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

महब्बते दुन्या की नौइय्यतें

बा'ज़ दुन्या कुफ़्र है, बा'ज़ फ़िस्क़, बा'ज़ ग़फ़्लत और बा'ज़ दुन्या ऐन ईमान। अबू जह्ल की दुन्या कुफ़्र थी और हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन (رَضِیَ اللهُ عَنْه) की ऐन ईमान, यूं ही क़ारून और फ़िरऔन की दुन्या कुफ़्र थी, हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की दुन्या ऐन ईमान थी, ऐसे ही महब्बते दुन्या अगर नफ़्सानी या शैतानी हो तो बुरी और रहमानी या ईमानी हो तो अच्छी।

(तफ़्सीरे नईमी, 4/287)

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : दुन्यावी ज़िन्दगी वोह है जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात में ख़र्च हो और जो ज़िन्दगी आख़िरत की तय्यारी में सर्फ़ (ख़र्च) हो वोह दुन्या की ज़िन्दगी नहीं अगर्चे दुन्या में ज़िन्दगी है। दुन्या की ज़िन्दगी और है, दुन्या में ज़िन्दगी कुछ और। दुन्या की ज़िन्दगी फ़ानी है मगर जो दुन्या में ज़िन्दगी आख़िरत के लिये है, फ़ना नहीं। (अच्छे बुरे अ़मल, स. 72, तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 932 मुलख़्ख़सन)

तलब गाराने दुन्या की अक़्साम

﴾1﴿ वोह लोग जो दुन्या का माल इस निय्यत से ह़ासिल करते हैं कि रिश्तेदारों से सिलए रेह़्मी करेंगे और ग़रीबों की मदद करेंगे, उन का शुमार सख़ियों में होता है, अगर उन का अ़मल उन की निय्यत के मुत़ाबिक़ हो तो अज्र पाएंगे लेकिन इस के बा वुजूद उन में समझदारी नाम की कोई चीज़ नहीं क्यूं कि अ़क़्लमन्द वोह होता है जो किसी ऐसी चीज़ की ख़्वाहिश न करे जिस के बारे में उसे पता न हो कि उसे पा लेने के बा'द इस का क्या ह़ाल होगा। लिहाज़ा इस निय्यत से माल ह़ासिल करने वाले "सा'लबा" के क़िस्से से इ़ब्रत ह़ासिल करें। (अच्छे बुरे अ़मल, स. 65, رسالۃ المذاکرۃ،ص41)

सा'लबा का क़िस्सा

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में सा'लबा नाम के एक शख़्स ने दरख़्वास्त की, कि इस के लिये मालदार होने की दुआ़ फ़रमाएं। **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ सा'लबा ! थोड़ा माल जिस का तू शुक्र अदा करे उस बहुत से बेहतर है जिस का शुक्र अदा न कर सके। दोबारा फिर सा'लबा ने ह़ाज़िर हो कर येही दरख़्वास्त की और कहा : उस की क़सम जिस ने आप को सच्चा नबी बना कर भेजा कि अगर वोह मुझे माल देगा तो मैं हर ह़क़ वाले का ह़क़ अदा करूंगा। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई, चुनान्चे **अल्लाह** पाक ने उस की बकरियों में बरकत फ़रमाई और इतनी बढ़ीं कि मदीने में उन की गुन्जाइश न हुई तो सा'लबा उन को ले कर जंगल में चला गया और जुमुआ़ व जमाअ़त की ह़ाज़िरी से भी मह़रूम हो गया। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ने उस का हाल पूछा तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم ने अर्ज़ किया कि उस का माल बहुत ज़ियादा हो गया है और अब जंगल में भी उस के माल की गुन्जाइश न रही। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सा'लबा पर अफ़्सोस ! फिर जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़कात के वुसूल करने वाले भेजे तो लोगों ने उन्हें अपने अपने सदक़ात दिये, जब सा'लबा से जा कर उन्हों ने सदक़ा मांगा, उस ने कहा : येह तो टेक्स हो गया, जाओ मैं पहले सोच लूं। जब येह लोग रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में वापस आए तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के कुछ अर्ज़ करने से क़ब्ल दो मरतबा फ़रमाया : सा'लबा पर अफ़्सोस ! इस के बा'द येह आयत नाज़िल हुई :

وَمِنۡہُمۡ مَّنۡ عٰہَدَ اللّٰہَ لَئِنۡ اٰتٰىنَا مِنۡ فَضۡلِہٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَ لَنَکُوۡنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِیۡنَ ﴿۷۵﴾ فَلَمَّاۤ اٰتٰىہُمۡ مِّنۡ فَضۡلِہٖ بَخِلُوۡا بِہٖ وَتَوَلَّوۡا وَّہُمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿۷۶﴾ (پ10، التوبۃ:75، 76)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन में कुछ वोह हैं जिन्हों ने **अल्लाह** से अ़हद किया हुवा है कि अगर **अल्लाह** हमें अपने फ़ज़्ल से देगा तो हम ज़रूर सदक़ा देंगे और हम ज़रूर सालिहीन में से हो जाएंगे। फिर जब **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमाया तो उस में बुख़्ल करने लगे और मुंह फेर कर पलट गए।

फिर सा'लबा सदक़ा ले कर हाज़िर हुवा तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** पाक ने मुझे इस के क़बूल फ़रमाने की मुमानअ़त फ़रमा दी। वोह अपने सर पर ख़ाक डाल कर वापस हुवा। फिर उस सदक़े को ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ के पास लाया उन्हों ने भी उसे क़बूल न फ़रमाया। फिर ख़िलाफ़ते

फ़ारूक़ी में मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पास लाया उन्हों ने भी क़बूल न फ़रमाया और ख़िलाफ़ते उ़स्मानी में येह शख़्स हलाक हो गया। (تفسیر نسفی،پ10،التوبۃ:75)

बारगारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत कितनी ख़ूब सूरत आरज़ू का इज़्हार करते हैं :

न मुझ को आज़्मा दुन्या का मालो ज़र अ़त़ा कर के
अ़त़ा कर अपना ग़म और चश्मे गिर्यां या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 340)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ दुन्या त़लब करने वालों की दूसरी क़िस्म

इस की भी दो क़िस्में हैं : ﴾1﴿ दुन्या के त़लब गारों की इस क़िस्म में वोह लोग दाख़िल हैं जिन का दुन्या से मक़्सद ख़्वाहिशात को पूरा करना और दुन्या की लज़्ज़तों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होना होता है, ऐसों का शुमार जानवरों में किया गया है। ﴾2﴿ वोह लोग जो दूसरों पर फ़ख़्र करने और बड़ा मालदार बन कर नुमायां नज़र आने के लिये माल ह़ासिल करते हैं। येह बे वुक़ूफ़ों, धोकेबाज़ों बल्कि मरदूदों और मल्ऊ़नों में शुमार होते हैं।

(अच्छे बुरे अ़मल, स. 67, رسالۃ المذاکرۃ،ص41)

दुन्या से महब्बत करने वालों का अन्जाम

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन दुन्या को एक बद सूरत आंखों वाली बुढ़िया की सूरत में लाया जाएगा, उस के दांत आगे को निकले होंगे और वोह निहायत बद सूरत होगी, वोह लोगों की त़रफ़ मुतवज्जेह होगी तो उन से पूछा जाएगा : क्या इसे जानते हो ? वोह

कहेंगे : हम इस की पहचान से **अल्लाह** पाक की पनाह चाहते हैं, तो कहा जाएगा : येह दुन्या है जिस पर तुम फ़ख़्र करते थे, इस की वज्ह से रिश्तेदारी के तअ़ल्लुक़ात ख़त्म करते थे, इसी के सबब एक दूसरे से ह़सद करते, दुश्मनी करते और गुरूर करते थे। फिर उस दुन्या को जहन्नम में डाल दिया जाएगा तो वोह आवाज़ देगी : ऐ मेरे रब ! मेरी इत्तिबाअ़ करने वाले और मेरी जमाअ़त कहां है ? **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : उन को भी इस के साथ कर दो। (موسوعہ لابن ابی الدّنیا، 5/72، رقم:123)

दुन्या के तीन ह़िस्से

﴾1﴿ जिस में सवाब है : येह वोह ह़िस्सा है जिस के वसीले से बन्दा भलाई तक पहुंचता है और बुराई से नजात पाता है। येह मोमिन की सुवारी, आख़िरत की खेती और किफ़ायत करने वाली ह़लाल रोज़ी है।

﴾2﴿ जिस का ह़िसाब है : येह वोह ह़िस्सा है जिस की वज्ह से तू किसी हुक्म की अदाएगी से ग़ाफ़िल न हो और उस की त़लब में ना जाइज़ काम का इरतिकाब न करे और इस के अह्ल वोह अग़्निया हैं जिन का ह़िसाब त़वील होगा, फ़ुक़रा इन से पांच सो साल पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।

﴾3﴿ जिस में अ़ज़ाब है : येह वोह ह़िस्सा है जिस में बन्दा तमाम ज़रूरी उमूर की अदाएगी से दूर हो कर गुनाहों में मुब्तला हो जाता है, जो इस ह़िस्से का मालिक बनेगा येह उस को आग की त़रफ़ बढ़ाएगा और ख़सारे के घर में धकेल देगा। (अच्छे बुरे अ़मल, स. 64, رسالۃ المذاکرۃ، ص41)

ऐशे दुन्या कुछ नहीं

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शहन्शाहे बनी आदम

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पहुंचा जब कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का'बतुल्लाह शरीफ़ के साए में तशरीफ़ फ़रमा थे, जब आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे देखा तो इर्शाद फ़रमाया : ''रब्बे का'बा की क़सम ! वोह सब से ज़ियादा ख़सारा पाने वाले हैं।'' ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं क़रीब आ कर बैठ गया जब कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बार बार येही फ़रमाते जा रहे थे, यहां तक कि मैं खड़ा हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! वोह कौन लोग हैं ?'' तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह मालो दौलत की कसरत वाले होंगे मगर वोह जो दाएं, बाएं आगे और पीछे ख़र्च करें और वोह बहुत थोड़े होंगे और जो भी ऊंट या गाय या बकरियों का मालिक हो और उन की ज़कात अदा न करे तो वोह (जानवर) क़ियामत के दिन पहले से ज़ियादा बड़े और मोटे हो कर आएंगे और अपने मालिक को सींगों से मारेंगे और खुरों से रौंद डालेंगे यहां तक कि तमाम लोगों का ह़िसाब व किताब ख़त्म हो जाएगा।'' (مسلم، ص385، حدیث:2300)

ख़ा न धोका, ऐ़श दुन्या कुछ नहीं — तुझ को ग़ाफ़िल फ़िक्रे उ़क़्बा कुछ नहीं
कुछ नहीं इस का भरोसा कुछ नहीं — ज़िन्दगी है चन्द रोज़ा कुछ नहीं
कर ले जो करना है आख़िर मौत है — एक दिन मरना है आख़िर मौत है
माल ह़ासिल कर न पैदा नाम कर — ऐ़श कर ग़ाफ़िल न तू आराम कर
जिस लिये आया है तू वोह काम कर — यादे ह़क़ दुन्या में सुब्ह़ो शाम कर
कर ले जो करना है आख़िर मौत है — एक दिन मरना है आख़िर मौत है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

शैत़ानी वस्वसा और उस का जवाब

बा'ज़ लोग धोका खा जाते हैं और येह समझते हैं कि हमारा बदन

कितना ही दुन्या में मसरूफ़ रहे मगर हमारा दिल दुन्या से फ़ारिग़ और ख़ाली रहता है, येह शैत़ानी वस्वसा है, भला येह कैसे हो सकता है कि कोई शख़्स दरिया में चले और पाउं न भीगें। दुन्या की मिसाल समुन्दर के खारे पानी की सी है कि जितना पियोगे उसी क़दर प्यास ज़ियादा लगेगी, दुन्या के ज़रो सामान को अपने इत़्मीनान का ज़रीआ़ समझना बड़ी ह़माक़त (बे वुक़ूफ़ी) है, जहां हमेशा रहना नहीं वहां इत़्मीनान कैसा....?

(ख़ुत़्बाते इमाम ग़ज़ाली, स. 124, الاربعین فی اصول الدین، ص155)

दुन्या की महृब्बत का इलाज

दुन्या की रग़्बत दो क़िस्म पर है : एक वोह जो दुन्यादार को आख़िरत के अ़ज़ाब का ह़क़दार बनाती है, उसे ह़राम कहते हैं। दूसरी वोह है जो आ'ला दरजात तक पहुंचने में रुकावट है और उसे त़वील ह़िसाब में फंसाने वाली है, इसे ह़लाल कहते हैं और समझदार आदमी जानता है कि क़ियामत के मैदान में ह़िसाबो किताब के लिये ज़ियादा देर तक उस का खड़ा रहना भी एक अ़ज़ाब है तो जिस को ह़िसाब में डाला गया उसे अ़ज़ाब दिया गया है। क्यूं कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस (दुन्या) के ह़लाल का ह़िसाब होगा और ह़राम पर अ़ज़ाब होगा। और येह भी फ़रमाया कि इस के ह़लाल पर अ़ज़ाब है लेकिन इस का अ़ज़ाब ह़राम के अ़ज़ाब से हलका है और अगर ह़िसाब न भी हो तो जन्नत में ह़ासिल होने वाले बुलन्द दरजे का छूट जाना और ह़क़ीर और ख़सीस (या'नी घटिया) दुन्या जो ख़त्म होने वाली है इस के लिये अफ़्सोस करना भी अ़ज़ाब है तो इस बात को दुन्या में ही देख लो कि जब तुम अपने ज़माने के लोगों को दुन्यवी सआ़दतों में आगे देखते हो तो तुम्हारे दिल में किस क़दर अफ़्सोस

पैदा होता है हालां कि तुम जानते हो कि येह आ़रिज़ी (Temporary) और फ़ानी सआ़दतें हैं और गदली हैं, इन में कोई सफ़ाई नहीं। तो वोह सआ़दत जिस की अ़ज़्मत बयान से बाहर है उस के चले जाने पर किस क़दर अफ़्सोस होना चाहिये ? ज़माने गुज़र गए लेकिन वोह बाक़ी हैं। अल ग़रज़ क़ियामत के दिन सुवाल का जवाब देने में ज़िल्लत, ख़ौफ़, ख़त़रा, मशक़्क़त और इन्तिज़ार है और येह सब कुछ उख़्रवी नुक़्सान का बाइ़स है तो दुन्या थोड़ी हो या ज़ियादा, ह़राम हो या ह़लाल जब तक तक़्वे पर मददगार न हो मल्ऊ़न है और येही वज्ह है कि **अल्लाह** पाक अम्बियाए किराम (عَلَيهِمُ السَّلَام), औलियाए किराम (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم) और फिर इन के बा'द दूसरे मुक़र्रबीन को दरजा ब दरजा आज़्माइशों में डालता है, येह सब कुछ इन पर शफ़्क़त और एह़सान के तौ़र पर होता है ताकि इन को आख़िरत में ज़ियादा ह़िस्सा मिले। (احیاء العلوم، 3/272)

आ़लमे इन्क़िलाब है दुन्या   चन्द लम्ह़ों का ख़्वाब है दुन्या
फ़ख़्र क्यूं दिल लगाएं इस से   नहीं अच्छी, ख़राब है दुन्या

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

दिल से दुन्या की मह़ब्बत निकालने का सबब

दुन्या के कामों में मश्ग़ूल रहने के बा वुजूद तेरा आख़िरत के लिये फ़िक्र करना और इस का शुऊ़र रखना, तेरे दिल से दुन्या की मह़ब्बत को निकाल देगा। और इसी को ज़ोह्दे ह़क़ीक़ी कहते हैं और येह हमेशा हमेशा के लिये तुझे **अल्लाह** पाक के क़रीब कर देगा।

(दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी, स. 29)

दुन्या के मुआ़मले में हमेशा अपने से नीचे के लोगों की त़रफ़ देखे, ऊपर वालों की त़रफ़ न देखे क्यूं कि शैत़ान हमेशा उस की नज़र को ऊपर वालों की त़रफ़ फेरता है। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक मौक़अ़ पर इर्शाद फ़रमाया : जो **अल्लाह** पाक और उस के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी में लगा रहता है, दुन्या उस की ख़िदमत में लगी रहती है। (अमीरे अहले सुन्नत की 786 नसीह़तें, स. 15)

दुन्या की मह़ब्बत से छुटकारे का बेहतरीन त़रीक़ा

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तुम्हें दुन्या को छोड़ने और माल को तक़्सीम करने पर उभारने वाले अस्बाब येह हैं : दुन्या की आफ़तों और ऐ़बों को याद करना, इस बात को ज़ेह्न में रखना कि दुन्या का नफ़्अ़ बहुत थोड़ा और जल्द ख़त्म होने वाला है और दुन्या त़लब करने वाले अच्छे नहीं हैं, फिर इस बात को याद करना कि मुझ पर **अल्लाह** पाक की बहुत सारी ने'मतें हैं ह़ालां कि मैं उस की राह में इतना ख़र्च नहीं करता जितना वोह मुझे अ़त़ा फ़रमाता है। जब तुम इन बातों में अच्छी त़रह़ ग़ौर करोगे तो तुम पर तर्के दुन्या और तक़्सीमे माल का मुआ़मला आसान हो जाएगा। यूंही येह भी याद करो कि दुन्या **अल्लाह** पाक की दुश्मन है और तुम **अल्लाह** पाक से मह़ब्बत करने वाले हो और जो किसी को दोस्त व मह़बूब रखे उस के दुश्मन को दुश्मन रखता है। दुन्या ह़क़ीक़त में मैल कुचैल और मुर्दार है, तुम देखते नहीं कि इस के लज़ीज़ खाने कुछ ही देर बा'द ख़राब और बदबूदार हो जाते हैं। पस दुन्या ख़ुश्बू में बसा ऐसा मुर्दार है जिस के ज़ाहिर को देख कर ग़ाफ़िल लोग धोके में पड़ गए और अ़क़्लमन्दों ने इस से कनारा कशी इख़्तियार कर ली। (منہاج العابدین، ص30)

अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अपने दिलों से दुन्या की मह़ब्बत निकाल दो, आख़िरत की मह़ब्बत इस में दाख़िल हो जाएगी । (فیض القدیر، 3/487، تحت الحدیث:3662)

ज़ोह्द और फ़क़्र में फ़र्क़

दुन्या ख़ुद इन्सान से अलग हो, इसे फ़क़्र (या'नी ग़ुर्बत) कहते हैं और दूसरी सूरत येह है कि बन्दा दुन्या से अलग हो, मत़लब येह कि उस के पास माल आए तो वोह नफ़रत की वज्ह से उसे ना पसन्द करे, माल के आने से इसे तक्लीफ़ हो, नीज़ उस के शर और उस में मश्ग़ूलिय्यत से बचने के लिये उस से राहे फ़िरार इख़्तियार करे । इस ह़ालत का नाम "ज़ोह्द" है और जिस शख़्स में येह सिफ़त पाई जाए उसे "ज़ाहिद (दुन्या से बे रग़बती रखने वाला)" कहते हैं । (احیاء العلوم، 4/234)

ज़ोह्द की फ़ज़ीलत

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : (दुन्या के मुआ़मले में) अपने से नीचे वालों को देखो और अपने से ऊपर वालों को मत देखो येह तुम्हारे लिये बेहतरीन नसीह़त है ताकि तुम **अल्लाह** पाक की ने'मतें न खो बैठो ।

(مسلم، ص1211، حدیث:7430)

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : बन्दा जब दुन्या से बे रग़बत होता है तो उस का दिल ह़िक्मत से रोशन हो जाता और आ'ज़ा (जिस्म के ह़िस्से) इबादत पर मददगार बन जाते हैं । (منہاج العابدین، ص29)

ज़ोह्द के तीन मर्तबे

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ज़ोह्द के तीन

मर्तबे हैं, एक ज़ोहद फ़र्ज़ है और वोह **अल्लाह** पाक की ह़राम की हुई चीज़ों से रुकना है। दूसरा ज़ोहद सलामती के लिये है और वोह शक व शुबुहात वाली चीज़ों को छोड़ना है। तीसरा ज़ोहद फ़ज़ीलत ह़ासिल करने के लिये है और वोह **अल्लाह** पाक की ह़लाल की हुई चीज़ों को भी छोड़ने में है और येह ज़ोहद का बहुत ही आ'ला मर्तबा है। (مکاشفۃ القلوب، ص242)

ज़ोहद की अ़लामात

﴾1﴿ जो चीज़ मौजूद हो उस पर ख़ुश न हो और जो चीज़ मौजूद न हो उस पर ग़मगीन भी न हो। ﴾2﴿ उस के नज़्दीक बुरा कहने वाला और ता'रीफ़ करने वाला दोनों बराबर हों। पहली अ़लामत माल में ज़ोहद की अ़लामत है और दूसरी जाह में अ़लामते ज़ोहद है। ﴾3﴿ **अल्लाह** पाक से मानूस हो और उस के दिल पर इत़ाअ़ते ख़ुदावन्दी की मिठास ग़ालिब हो।

(احیاء العلوم، 4/298 ملخصاً)

ज़ोहद की अक़्साम

ज़ोहद (या'नी दुन्या से बे रग़बती) की वज्ह से इ़बादत ज़ियादा और बुलन्द मर्तबा हो जाती है लिहाज़ा इ़बादत के त़लब गार पर लाज़िम है कि वोह दुन्या से बे रग़बत हो जाए और इस से दूर रहे। ज़ोहद की दो क़िस्में हैं : ﴾1﴿... इख़्तियारी और ﴾2﴿... ग़ैर इख़्तियारी।

इख़्तियारी ज़ोहद येह है कि जो पास न हो उस की त़लब न करे, जो पास हो उसे तक़्सीम कर दे और दुन्या और इस के साज़ो सामान का इरादा छोड़ दे। जिस शख़्स में येह तीन ख़ूबियां मौजूद हों वोह ज़ाहिद है, तीसरे जुज़ या'नी त़लबे दुन्या भी दिल से निकाल देना बहुत मुश्किल है क्यूं कि बहुत ऐसे हैं जो ऊपर ऊपर से तो तारिके दुन्या (या'नी दुन्या को

छोड़ने वाले) हैं मगर उन के दिलों में दुन्या की मह़ब्बत चुटकियां लेती रहती है ऐसा शख़्स इसी कश्मकश में मुब्तला रहता है, ह़ालां कि ज़ोह्द की अस्ल शान इसी तीसरे जुज़ से ही पैदा होती है।

ग़ैर इख़्तियारी ज़ोह्द येह है कि दिल दुन्यावी अश्या के शौक़ व ख़यालात से सर्द पड़ जाए। जब बन्दा इख़्तियारी ज़ोह्द अपनाएगा, यूं कि जो पास नहीं उसे त़लब न करे, जो पास है उसे दूर कर दे और दिल से दुन्या का इरादा भी निकाल दे तो फिर उस का दिल दुन्या से सर्द पड़ जाएगा, दुन्या उस के नज़्दीक ह़क़ीर हो जाएगी और उसे दुन्या का ख़याल न आएगा और येह ग़ैर इख़्तियारी ज़ोह्द है। (منہاج العابدین، ص29)

ज़ोह्द के दरजात

﴾1﴿ इन्सान तकल्लुफ़ के साथ दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करे और अपनी ख़्वाहिशात के बा वुजूद उसे छोड़ने की कोशिश करे तो ऐसा शख़्स मुतज़ह्हिद है और हो सकता है वोह इस पर हमेशगी इख़्तियार कर के ज़ोह्द को पा ले।

﴾2﴿ वोह अपनी ख़ुशी से दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करे या'नी वोह जिस चीज़ की लालच कर रहा है उस की निस्बत से दुन्या को ह़क़ीर जाने, जैसे कोई शख़्स दो दिरहम के लिये एक दिरहम छोड़ देता है और येह चीज़ उस पर दुश्वार नहीं होती लेकिन उस की तवज्जोह दुन्या और अपने नफ़्स की त़रफ़ भी रहती है (या'नी वोह ख़याल करता है कि उस ने बड़ी अहम चीज़ को छोड़ा है) और येह भी ज़ोह्द है, लेकिन इस में नुक़्सान का अन्देशा है।

﴾3﴿ तीसरा दरजा सब से आ'ला है और वोह येह कि बन्दा ख़ुशी से ज़ोह्द इख़्तियार करे और अपने ज़ोह्द में मुबालग़ा इख़्तियार करे और येह ख़याल न करे कि इस ने कोई चीज़ छोड़ी है इस लिये कि वोह जानता है कि दुन्या

कोई चीज़ नहीं, दुन्या की आख़िरत के मुक़ाबले में कोई अहम्मिय्यत नहीं। आ'ला दरजा येह है कि तुम रिज़ाए इलाही के लिये इस के सिवा हर चीज़ से बे रग़बत हो जाओ और येह चीज़ **अल्लाह** पाक (के दीदार) की लज़्ज़त और इस के सिवा हर ने'मत से ज़ोह्द इख़्तियार करने की पहचान से ह़ासिल होती है लिहाज़ा तुम्हें चाहिये कि अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ खाना, लिबास, निकाह़ और रिहाइश इख़्तियार करो, जिस से तुम्हारे बदन का गुज़ारा हो और तुम अपना दिफ़ाअ़ कर सको, येही ह़क़ीक़ी ज़ोह्द है।

(لباب الاحیاء، ص333 ۔ مختصر احیاء علوم الدین، ص296)

ज़ोह्द के हुसूल के अस्बाब

ज़ोह्द से मक़्सूद येह है कि फ़ुज़ूल, ज़ाइद और ग़ैर ज़रूरी चीज़ों से बचा जाए ग़रज़ येह कि सिर्फ़ इस क़दर ताक़तो क़ुदरत मौजूद रहे जिस से इबादत और **अल्लाह** पाक की फ़रमां बरदारी कर सको। मह़ज़ खाना पीना और लज़्ज़त ह़ासिल होना मक़्सद न हो और **अल्लाह** पाक को इस पर भी क़ुदरत है कि तुम्हें बिग़ैर किसी ज़ाहिरी सबब के जैसा कि फ़िरिश्ते इन माद्दी अस्बाबो ज़राएअ़ के बिग़ैर ही ज़िन्दा हैं, **अल्लाह** पाक को इस की भी ताक़त है कि तुम्हें तुम्हारे पास मौजूद शै के ज़रीए ज़िन्दा रखे या ऐसी शै मुहय्या फ़रमा दे जिस का तुम्हें वह्मो गुमान तक न हो, इस लिये अगर तुम तक़्वे पर क़ाइम रहोगे तो तुम्हें बक़ाए ह़यात के लिये त़लबे दुन्या वग़ैरा की ह़ाजत नहीं और अगर ज़ोह्द का येह दरजा तुम्हें ह़ासिल न हो तो ज़ादे आख़िरत और तक़्वे की निय्यत से तलाश करो। शह्वत व लज़्ज़त की ग़रज़ से तलाश न करो क्यूं कि जब तुम्हारी निय्यत नेक होगी तो येह

तलबे आखिरत में ही शुमार होगी और इस तरह तुम्हारे ज़ोहद में कोई फ़र्क़ नहीं आएगा। (منہاج العابدین، ص32)

《1》 कभी तो दोज़ख़ का ख़ौफ़ और अज़ाब का अन्देशा ज़ोहद का सबब बन जाता है और इस ज़ोहद को ख़ाइफ़ीन का ज़ोहद कहते हैं। 《2》 कभी उख़्रवी ने'मतों की लज़्ज़त ज़ोहद का बाइस हो जाती है और इस को राजीन का ज़ोहद कहते हैं, येह पहले दरजे वाले से बढ़ा हुवा है। 《3》 येह सब से आ'ला है मा सिवल्लाह की जानिब से बे तवज्जोही और नफ़्स का **अल्लाह** के इलावा को हक़ीर समझ कर छोड़ देना ज़ोहद का बाइस हो, इस को हक़ीक़ी ज़ोहद कहते हैं। (ख़ुत्बाते इमाम ग़ज़ाली, स. 191) (الاربعین فی اصول الدین، ص209)

ज़ोहद से अफ़्ज़ल हालत

ज़ोहद से भी अफ़्ज़ल हालत येह है कि बन्दे के नज़्दीक माल का होना और न होना बराबर हो। माल मिलने पर न तो ख़ुश हो और न ही तक्लीफ़ महसूस करे जब कि न मिलने पर भी येही हालत हो बल्कि इस की हालत ऐसी हो जाए जैसी उम्मुल मुअमिनीन हज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा तय्यिबा ताहिरा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا की थी कि किसी ने आप की ख़िदमत में एक लाख दिरहम का अतिय्या नज़्र किया तो आप ने क़बूल फ़रमा लिया और उसी दिन तक़्सीम फ़रमा दिया। ख़ादिमा ने अर्ज़ की : आप ने आज जो माल तक़्सीम फ़रमाया अगर उस में से एक दिरहम का गोश्त ख़रीद लेतीं तो हम उस से रोज़ा इफ़्तार करते। फ़रमाया : अगर तुम याद दिला देतीं तो मैं ऐसा ही करती। (احیاء العلوم، 4/235)

जिस शख़्स की कैफ़िय्यत ऐसी हो, अगर पूरी दुन्या भी उस के क़ब्ज़े में हो तो उसे कोई नुक़्सान नहीं हो सकता क्यूं कि वोह माल को अपने

क़ब्ज़े में नहीं बल्कि **अल्लाह** पाक के ख़ज़ाने में समझता है और उस के नज़्दीक इस बात में कोई फ़र्क़ नहीं होता कि माल उस के क़ब्ज़े में है या किसी और के, ऐसी हालत वाले शख़्स का नाम "मुस्तग़्नी" रखना चाहिये क्यूं कि वोह माल के होने न होने दोनों से बे परवा है। (احیاء العلوم،4/235)

ज़ोहद का कमाल दरजा

माल के मुआमले में ज़ोहद का कमाल दरजा येह है कि बन्दे के नज़्दीक माल और पानी बराबर हों, ज़ाहिर है कि कसीर पानी का इन्सान के क़रीब होना उसे नुक़्सान नहीं देता जैसा कि साहिले समुन्दर पर रहने वाला शख़्स, और न ही पानी का कम होना ज़रर देता है जब कि ब क़दरे ज़रूरत पानी दस्त याब हो। पानी एक ऐसी चीज़ है जिस की इन्सान को ज़रूरत होती है, इन्सान का दिल न तो कसीर पानी से नफ़रत करता है और न ही राहे फ़िरार इख़्तियार करता है बल्कि वोह कहता है कि मैं इस से अपनी हाजत के मुताबिक़ पियूंगा, **अल्लाह** पाक के बन्दों को पिलाऊंगा और इस में बुख़्ल नहीं करूंगा। इन्सान के नज़्दीक माल की हालत भी येही होनी चाहिये कि इस के होने न होने से इसे कोई फ़र्क़ न पड़े। जब बन्दे को **अल्लाह** पाक की मा'रिफ़त हासिल हो जाए और तवक्कुल की दौलत नसीब हो जाए तो फिर उसे इस बात पर कामिल यक़ीन हो जाता है कि वोह जब तक ज़िन्दा है उसे ब क़दरे ज़रूरत रोज़ी मिलती रहेगी जैसा कि पानी मिलता है। (احیاء العلوم،4/237)

न मुझ को आज़्मा दुन्या का मालो ज़र अ़ता कर के
अ़ता कर अपना ग़म और चश्मे गिर्यां या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 340)

अगले हफ़्ते का रिसाला